दादा भगवान परिवार का

जुलाई २०२४

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

संपादकीय

बालमित्रों,

अंधेरी रात हो, बाहर बिजली कड़क रही हो, बहुत बड़ा तूफान आया हो, ऐसे टाइम पर जो लोग घर के बाहर होंगे उन्हें भय, चिंता, कठिनाई सब घेर लेंगे। लेकिन जो घर के अंदर होंगे उन्हें? वे लोग बिल्कुल सुरक्षित फील करेंगे।

जिस प्रकार बाहर के तूफान के समय घर की बाउन्ड्री के अंदर सेफ लगता है, उसी तरह ज्ञानी की छाया में रहने वालों को दुःख के समय हमेशा ज्ञानी का रक्षण महसूस होता है।

इस अंक में हम देखेंगे कि नीरू माँ के प्रेम में, उनके शब्दों में और उनकी हाजिरी में इतना अधिक बल है कि उनकी छाया में रहने वालों को भय, चिंता, कठिनाई या पीड़ा छू भी नहीं सकते। इसीलिए 'पराजय पार्टी' में इन सभी भावनाओं ने मिलकर अपनी सबसे बड़ी हार के बारे में चर्चा की। आइए देखें कि यह 'पराजय पार्टी' क्या है? चिली ने आलु के लिए कौन सी पार्टी रखी और उस पार्टी में क्या हुआ?

-डिम्पल मेहता

वर्ष : १२ अंक : ०४
अखंड क्रमांक : १३६
जुलाई २०२४

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सीटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : ९३२८६६११६६/७७
email:akramexpress@dadabhagwan.org

Editor: Dimple Mehta

Printer & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by and Published from
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Printed at
Amba Multiprint
Opp. H B Kapadiya New High School,
Chhatral-Pratappura Road,
At-Chhatral, Tal. Kalol
Dist. Gandhinagar – 382729.

© 2024, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

अक्रम एक्सप्रेस

पचास वर्षों में पहली बार एक बेहद अनोखी पार्टी रखी गई। पार्टी में हर तरह की फीलिंग्स को आमंत्रित किया गया। फीलिंग्स अर्थात् समझ गए न? हाँ, हाँ, फीलिंग्स अर्थात् भावनाएँ जैसे कि चिंता, भय, पीड़ा, प्रेम, आनंद आदि। कठिनाई को भी 'स्पेशल गेस्ट' के रूप में आमंत्रित किया गया था।

पार्टी की थीम थी - 'पराजय'। सभी अपनी सबसे बड़ी हार के बारे में बात करने वाले थे।

चिंता, भय और कठिनाई तो पार्टी में पहुँच चुके थे। लेकिन पीड़ा, प्रेम और आनंद का कोई अता-पता नहीं था। आखिरकार, रात के बारह बजे पीड़ा ने पार्टी में एन्ट्री की।

चिंता : अब ये प्रेम और आनंद आ जाएँ तो हम पार्टी शुरू करें।

भय (डरते-डरते) : मुझे नहीं लगता कि वे लोग आएँगे।

कठिनाई : क्यों?

पीड़ा : क्योंकि वे लोग तो पूज्यश्री के साथ यू.एस.ए. गए हैं।

पूज्यश्री का नाम सुनते ही चिंता, भय और कठिनाई दौड़कर छुप गए।

चिंता : शश... कोई आवाज़ मत करना।

पीड़ा : अरे, बाहर आओ। पूज्यश्री यहाँ नहीं हैं। और वैसे भी, प्रेम और आनंद तो हमेशा पूज्यश्री के साथ ही रहते हैं। इसलिए वे दोनों पार्टी में नहीं आएँगे। हम पार्टी शुरू करते हैं।

सभी डरते-डरते बाहर आए। चिंता ने एक लंबा सा पेपर खोलकर अपनी हार के बारे में कहना शुरू किया।

जीतने का प्रयास किया लेकिन...

मैं हूँ चिंता। मेरी खासियत यह है कि जो भी मुझे बुलाता है, मैं तुरंत ही दौड़कर उसके पास चली जाती हूँ। और फिर दिन-रात उसके साथ ही रहती हूँ। उसकी नींद और चैन छीन लेती हूँ।

वैसे तो छोटी-छोटी तकलीफों में मुझे बुलाया जाता है। परंतु आज से बत्तीस साल पहले कुछ अलग ही हुआ। देश भर से मुझे आमंत्रण मिला। उस समय NRI महात्मा नीरू माँ के साथ सम्मेद शिखरजी की यात्रा पर गए थे।

उसी दौरान बाबरी मस्जिद टूटी थी। हर तरफ टेन्शन वाला माहौल हो गया और इसीलिए वह मेरे लिए एकदम बेस्ट टाइम था। लेकिन नीरू माँ के साथ वाले टोले में से एक भी व्यक्ति ने मुझे याद नहीं किया।

उस दिन वे लोग एक गाँव से दूसरे गाँव जा रहे थे। रास्ते में लोग गुस्से से भरे हुए, सब कुछ जला देने के इरादे से केरोसिन के कैन लेकर खड़े थे। मुझे विश्वास था कि यह देखते ही महात्मा मुझे याद करेंगे। मैं एक अँधेरे कोने में जाकर खड़ी हो गई और उनकी राह देखने लगी। उसी समय नीरू माँ ने सभी से कहा, 'आज सभी शुद्धात्मा देखने की सामायिक करना!' वह क्या होती है, क्या पता। लेकिन वह करने से इतने भयंकर वातावरण में भी किसी ने मुझे याद नहीं किया। सभी शांति से उस रास्ते से गुजर गए।

लेकिन कोई कब तक मुझसे बचता! जैसे ही वे लोग पहाड़ चढ़कर नीचे उतरे, उन्हें पता चला कि पूरे देश में कर्फ्यू लग गया है। सभी ट्रेनें हड़ताल पर गई हैं। और बस, सभी ने तुरंत ही मुझे बुला लिया, 'मुझे तो घर वापिस जाना है। यदि मैं अमेरिका नहीं जाऊँगा तो मेरी नौकरी

चली जाएगी।' मुझे मज़ा आना शुरू ही हुआ था कि तभी किसी ने नीरू माँ से कहा, 'नीरू माँ, आप दादा से बात करो न, दादा क्या कहते हैं?'

'दादा' का नाम आते ही मैं बहुत डर गई। मैं पूरी दुनिया को परेशान कर सकती हूँ लेकिन दादा भगवान के नज़दीक भी नहीं जा सकती। नीरू माँ ने कहा, 'सभी गरबा करो। मैं बीच में बैठकर दादा को प्रार्थना करती हूँ।' और उस एक घंटे के लिए तो मानों सब मुझे भूल ही गए।

एक घंटे बाद नीरू माँ ने कहा, दादा ने कहा है, 'जो नीरू बेन के साथ रहेगा उसका बाल भी बाँका नहीं होगा। नीरू माँ से अलग मत होना।' यह सुनकर मैंने तय किया, 'ये लोग चाहे कुछ भी करें लेकिन मैं तो उनके ऊपर अटैक करके ही रहूँगी।'

तभी पता चला कि ट्रेन की स्ट्राइक खत्म हो गई है। सभी सामान पैक करके स्टेशन पहुँच गए। रात के ढाई बजे थे। पारसनाथ स्टेशन बिल्कुल सुनसान था। यह देखकर मुझे लगा कि अब कोई मुझे बुलाएगा। लेकिन तभी स्टेशन मास्टर ने माइक में कहा, 'पारसनाथ स्टेशन दादा भगवान परिवार का हार्दिक स्वागत करता है!' बस, फिर तो महात्मा मुझे याद करने के बजाय आनंद से भर गए।

सबकी खुशी देखकर मैं हार गई। बस, मैं वहाँ से निकलने का सोच ही रही थी कि तभी मुझे पता चला कि ट्रेन स्टेशन पर सिर्फ ढाई मिनिट ही रूकेगी। अब खुश होने की मेरी बारी थी। मुझे विश्वास था कि अमेरिका के महात्मा किसी भी तरह ढाई मिनिट में ट्रेन में नहीं चढ़ पाएँगे। उनके बैग्स ही इतने बड़े थे कि मुझे याद किए बिना वे रह ही नहीं सकते थे।

लेकिन नीरू माँ को देखकर स्टेशन मास्टर को पता नहीं क्या हुआ कि वे कहने लगे, 'नीरू माँ, मैं जब तक ग्रीन लाइट नहीं दूँगा तब तक ट्रेनवाला क्या करेगा? जब तक दादा के महात्मा ट्रेन में नहीं चढ़ जाते तब तक मैं ग्रीन लाइट नहीं दूँगा।' लो, फिर से मेरी हार हुई! मुझे विश्वास हो गया कि जब तक नीरू माँ हैं तब तक मेरा कुछ नहीं चलेगा। फिर भी हार माने बिना मैं उनके साथ ही ट्रेन से कलकत्ता गई।

वे लोग खुशी-खुशी ट्रेन से नीचे उतरे। वे सोच रहे थे कि 'यहाँ से अब एयरपोर्ट जाएँगे और वहाँ से घर जाएँगे।' उन्हें कहाँ पता था कि घर तो क्या वे एयरपोर्ट तक भी नहीं पहुँच पाएँगे। कलकत्ता शहर में तो 'शूट ऐट साइट' यानी कि देखते ही गोली मारने का ऑर्डर था। तो वे लोग एयरपोर्ट पहुँचेंगे ही कैसे! अब नीरू माँ उन्हें किस तरह बचाएँगी?

तभी वहाँ कहीं से चार ओपन मेटाडोर आईं। उन्होंने कहा, 'हमारे पास 'पास' है, हमें पैसा दो हम ले जाएँगे।' और टेन्शन के वातावरण में फिर से खुशी छा गई। कुछ महात्मा जिनका वजन ज्यादा था, उन्हें देखकर मैंने सोचा, 'ये लोग मेटाडोर में किस तरह चढ़ेंगे? अब तो मुझे याद किए बिना कोई चारा ही नहीं है!'

लेकिन नीरू माँ की हाजिरी के कारण कोई प्रॉब्लम टिकती ही नहीं थी। सभी महात्माओं ने उन्हें खींचकर, धक्का मारकर, जैसे-तैसे करके ऊपर चढ़ा ही दिया। इतनी परेशानी होने के बावजूद इन महात्माओं को नीरू माँ के साथ इतना सेफ लग रहा था कि जहाँ 'शूट ऐट साइट' का ऑर्डर था उस जगह पर उन्होंने ऊँची आवाज में 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' गाना शुरू कर दिया।

अरे, आप विश्वास नहीं करोगे, परंतु यह देखकर मैं खुद चिंता होने के बावजूद मुझे चिंता होने लगी कि कोई गोली मारकर इन्हें उड़ा न दे। रास्ते में मिलिटेरी वाले, घर की खिड़की बंद करके बैठे हुए लोग भी खिड़की खोलकर देखने लगे कि ये सब कौन हैं जिन्हें बिल्कुल भी चिंता नहीं हो रही है!

सच कहूँ तो मुझे भी शॉक लगा था कि यह नीरू माँ का कैसा जादू है! किसी को मेरा विचार ही नहीं आ रहा है। एक व्यक्ति ने नीरू माँ से कहा, 'नीरू माँ हम चार्टर्ड (अपनी खुद की) फ्लाइट से जाएँगे।' यह सुनकर मुझे हँसी आ गई। क्योंकि मुझे पता था कि एयरपोर्ट पर पाइलट की स्ट्राइक है।

लेकिन अब तक तो आप सब जान गए होंगे कि नीरू माँ की हाजिरी थी इसलिए स्ट्राइक जैसी छोटी सी तकलीफ तो टिक ही नहीं सकती। सभी एयरपोर्ट पहुँचे तब तक स्ट्राइक खत्म हो गई। यह देखकर मुझे चक्कर आ गए। नीरू माँ के आस-पास रहने वालों को तो मुझे याद करने का मौका ही नहीं मिल रहा था। एयरपोर्ट पर आठ-दस लोगों ने कहा, 'हम यहाँ कलकत्ता ही रूक जाते हैं। थोड़ा काम पूरा करके फिर आएँगे।'

मैंने मन से तो हार मान ली थी लेकिन आखिरी प्रयास करने के लिए मैं महात्माओं के साथ फ्लाइट में गई, तो फ्लाइट में महात्माओं तथा नीरू माँ के अलावा कोई नहीं था। तीन सौ पचास सीटवाली फ्लाइट में सिर्फ सत्तर लोग थे। सचमुच यह तो चार्टर्ड फ्लाइट ही बन गई थी।

फिर तो महात्माओं ने फ्लाइट में दादा के

02:30

'पारसनाथ स्टेशन दादा भगवान परिवार का हार्दिक स्वागत करता है!'

फोटो लगाए और आरती की। दादा की आरती सुनकर तो मैं बहुत डर गई। महात्मा आनंद में थे और मैं घबराहट के मारे काँप रही थी।

क्या सोचकर मैं नीरू माँ की हाजिरी में जीतने का प्रयास कर रही थी! नीरू माँ की हाजिरी में मेरी हार पक्की थी। लेकिन अचानक मुझे जीतने का एक चान्स मिला। मुझे दादा भगवान का मैसेज याद आया, 'जो लोग नीरू बेन के साथ रहेंगे उनका बाल भी बाँका नहीं होगा। नीरू बेन से अलग नहीं होना।' लेकिन आठ लोग कलकत्ता एयरपोर्ट पर नीरू माँ से अलग हो गए थे। मैं तुरंत ही उनके पास पहुँच गई। कलकत्ता में दो घंटे बाद कर्फ्यू लग गया जो आठ दिनों तक चला। वे लोग वहाँ फँस गए। मैंने उन आठ लोगों को आठ दिनों तक बहुत परेशान किया।

परंतु हाँ, उसके बाद से जहाँ नीरू माँ होते हैं मैं वहाँ जाने का सोचती भी नहीं हूँ। अरे, उनकी हाजिरी तो क्या, लेकिन जो लोग नीरू माँ को सिर्फ याद करते हैं उनके नज़दीक जाना भी मेरे लिए इम्पॉसिबल है।

इतना कहकर चिंता थककर वहीं बैठ गई। और फिर बारी आई 'पीड़ा' की। पीड़ा को अपनी पूरी स्टोरी मुँह-ज़बानी याद थी। लेकिन इस कॉम्पिटिशन में बिना देखे बोलने के कोई एक्स्ट्रा मार्क्स नहीं थे। पीड़ा ने शुरू किया...

पीड़ा की पीड़ा

मैं पीड़ा हूँ। मेरे बारे में आप जानते ही हैं। आप साइकल से गिरें या आपको बुखार आए, मैं साथ में आती ही हूँ। मेरी खासियत यह है कि मैं जब चाहे आ सकती हूँ और जितना चाहूँ उतने टाइम आपके साथ रह सकती हूँ। मेरी हाजिरी कोई भूल नहीं सकता। मुझे भी कई बार ऐसा लगता है कि 'मैं ऐसी क्यों हूँ? मैं क्यों सबको इतनी तकलीफ देती हूँ?' कई बार तो मैं जाना चाहती हूँ फिर भी कई लोग मेरा हाथ ज़ोर से पकड़कर रखते हैं। लेकिन वह दिन तो कुछ अलग ही था।

यह कई साल पहले की बात है। उन दिनों सीमंधर सीटी में बहुत कम लोग रहते थे। थोड़े-थोड़े दिनों में सब मिलकर डब्बा पार्टी करते थे। नीरू माँ भी इस पार्टी में आते। आपको लगेगा कि जहाँ आनंद होना चाहिए वहाँ पीड़ा का क्या काम है?

हुआ यूं कि एक चाचा थे। उनका ब्रेइन ट्यूमर (दिमाग की गाँठ) का ऑपरेशन हुआ था। और इसलिए मैं उनके साथ रहती थी। आपको साइकल से गिरने पर जो पीड़ा और दर्द होता है उससे कई गुना अधिक पीड़ा उन्हें थी। लेकिन फिर भी मुझे लेकर वे इस डब्बा पार्टी में गए। खाना परोसने के लिए जैसे ही वे प्लेट लेने गए कि अचानक किसी ने उनका हाथ पकड़ा।

अरे, ये तो नीरू माँ थें! उन्होंने हाथ पकड़कर चाचा को अपने पास बिठाया। नीरू माँ ने अपने हाथों

से चाचा को खाना खिलाया। कितने ही दिनों से मैं चाचा के साथ थी। लेकिन पहली बार चाचा मुझे भूल गए।

नीरू माँ का हाथ पकड़ते ही चाचा ने मेरा हाथ छोड़ दिया। पता नहीं, नीरू माँ क्या करते थे। कितने ही दिन, महीने, अरे, सालों से जो लोग मुझे साथ लेकर घूमते हैं, वे सब नीरू माँ से मिलते ही मुझे भूलकर नीरू माँ के प्रेम में भीग जाते हैं। हाँ, मैं नीरू माँ से हार गई। लेकिन यदि ऐसा प्रेम देखने को मिले तो मैं बार-बार हारना चाहती हूँ।

कुछ क्षण के लिए पार्टी में सभी चुप हो गए। चिंता की आँखों में तो आँसू भी आ गए। लेकिन 'कठिनाई' ने अपनी स्पीच शुरू की और वातावरण को हल्का कर दिया।

पीड़ा- दर्द

बू...म... मैं अचानक वहाँ पहुँच गई...

मैं सबसे स्टाइलिश हूँ, ऐसा सब मुझसे कहते हैं। मेरी खासियत यह है कि मैं जब चाहूँ तब अटैक करती हूँ। आपको लगेगा कि सब कुछ ठीक है और, बू...म! मैं आ जाती हूँ। मेरे पास इतने सारे हथियार हैं कि मैं सब तरफ से हमला करके सामने वाले को परेशान कर देती हूँ।

सालों पहले मैंने एक ऐसा ही अटैक किया था। मुंबई में एक बहन अपने पति और दो बच्चों के साथ शांति से रहती थीं। बू...म, मैं अचानक वहाँ पहुँच गई। उनके हज़बन्ड गुजर गए। उन बहन को अकेले ही दो बच्चों का पालन-पोषण करना था, पैसा कमाना था और घर चलाना था। बहन ने सोचा, 'मुझे ब्यूटी पार्लर का काम आता है। मैं कर लूँगी।' वे बहन मुझे विदाई देने की सोच ही रही थीं कि तभी, बू...म! हर बिल्डिंग में एक-दो ब्यूटिशियन आ गई। उन बहन को इतना कॉम्पिटिशन का सामना करना पड़ा कि कमाना मुश्किल हो गया, वे मेरे जाल में अच्छी तरह फँस गईं।

परंतु एक दिन बहन के घर पर 'वे' आए। 'वे' बिल्डिंग के नीचे थे तभी से मेरा दम घुटने लगा। मैं सोच ही रही थी कि अचानक मुझे यह क्या हो रहा है कि तभी 'वे' घर में दाखिल हुए।

उनकी सफेद साड़ी, प्रेम भरी आँखें और भव्य व्यक्तित्व को देखकर मेरे हाथ-पैर ढ़ीले हो गए। वे थे, नीरू माँ। सच कहूँ तो मैंने उन्हें बहुत परेशान किया है। लेकिन वे मुझसे कभी नहीं हारे।

नीरू माँ पूरे घर में घूमें। ब्यूटी पार्लर वाले रूम में जाकर पूछा, 'यहाँ क्या करती हो?' बहन ने ब्यूटी पार्लर की बात की लेकिन दूसरी कोई बात नहीं हुई। मुझे लगा 'अच्छा हुआ, मैं बच गई! नीरू माँ को पता नहीं चला कि मैंने यहाँ अटैक किया है।' नीरू माँ कुछ देर तक बैठे और वापस जाने लगे।

जाते-जाते वे वापिस लौटे और बहन से पूछा, 'घर ठीक से चल रहा है न? कठिनाई तो नहीं हो रही न?' और बू...म। बहन ने कह दिया कि 'कठिनाई तो होती है' और बस, तभी से मेरी हार की शुरुआत हो गई।

नीरू माँ ने कहा, 'फॉरेन में तुम्हारे जैसी बहनें जो अकेली रहती हैं वे अपने घर में पेइंग गेस्ट रखती हैं। यानी कि अपने घर का कुछ हिस्सा दूसरे लोगों को रहने के लिए किराए से देती हैं। तुम भी ऐसा करो। लड़कियों को पेइंग गेस्ट रखो। तुम शिविर में आओगी तब वे पेइंग गेस्ट लड़कियाँ तुम्हारे बच्चों को संभाल लेंगी और तुम्हारा घर भी संभल जाएगा। तुम्हें पैसे भी मिलते रहेंगे।' यह सुनकर मैंने सोचा, 'ओह नो! अब तो मुझे सामान पैक करना पड़ेगा।' लेकिन फिर मुझे लगा कि नीरू माँ ने आइडिया तो दे दिया लेकिन पेइंग गेस्ट के लिए कोई लड़की तो मिलनी चाहिए न!

पता नहीं कहाँ से लेकिन एक सप्ताह में ही एक साऊथ इंडियन लड़की आई और पहली पेइंग गेस्ट बनी। और बस, फिर तो सचमुच में ही सामान पैक करके मुझे चले जाना पड़ा। बच्चों की पढ़ाई, कॉलेज, लड़की की शादी आदि सब पेइंग गेस्ट के किराए के पैसों से संपन्न हुए।

२०२० में कोविड आया। तब मैंने सोचा, 'अब फिर से उन बहन पर अटैक करने का टाइम आ गया है। अभी कहाँ से पेइंग गेस्ट लाएँगी? अभी तो सब अपने-अपने घरों में बंद हैं। अब तो नीरू माँ भी नहीं हैं कि उन्हें बचाएँ। मैं आत्मविश्वास के साथ उनके घर पर हमला करने गई, लेकिन वहाँ जाकर पता चला कि बहन ने तो २०१९ में ही घर बेच दिया था!' बोलो, कोविड आए उससे पहले ही घर बिक गया। भले ही नीरू माँ हाजिर नहीं थे लेकिन उनके आशीर्वाद

तो निरंतर बहन की रक्षा कर रहे थे।

वे दिखाई नहीं देते लेकिन सिक्रेटली अपने प्यारे महात्माओं की रक्षा करते हैं। बस, अब तो मैंने तय कर लिया है कि नीरू माँ के महात्माओं पर कम अटैक करूँगी। क्योंकि जैसे ही मैं उनके घरों में प्रवेश करती हूँ वे सब दादा-नीरू माँ को याद करते हैं। और फिर पता नहीं, दादा-नीरू माँ क्या जादू करते हैं कि मेरे होने के बावजूद सभी महात्मा आनंद में रहते हैं। फिर क्या मज़ा आएगा मुझे? इसलिए फिर मैं वहाँ से चली जाती हूँ।

अचानक पार्टी में अँधेरा हो गया। अरे, कठिनाई ने चले जाने की बात कही, लेकिन ये लाइट्स कहाँ चली गईं? और तभी बैकग्राउन्ड में एक डरावना म्यूज़िक बजा। सब डर गए। 'हा...हा...हा...' जोर से हँसने की आवाज आई। मेरी एन्ट्री तो ऐसी ही होगी न!

मेरी एन्ट्री होते ही...

मैं हूँ 'भय'। मैंने कई बार आपका साथ दिया है। जैसे कि क्लास रूम में कठिन परीक्षा के दौरान, स्टेज पर, जब आप किसी कॉम्पिटिशन में हार रहे हो तब, आदि-आदि। मेरी खासियत यह है कि मेरी एन्ट्री होते ही मेरा दुश्मन, यानी कि आपके अंदर का 'कॉन्फिडन्स' दुम दबाकर भाग जाता है। कई साल पहले मैंने अपने स्टाइल से एक आप्तपुत्र भाई के 'ड्राइविंग' कॉन्फिडन्स को भी भगाने की कोशिश की थी। मैं उनका साथी बनने की तैयारी में ही था लेकिन फिर... अरे, यह तो स्टोरी का एन्ड आ गया। मैं शुरु से बताता हूँ।

यह बात १९९३ की है। टेम्पो ड्राइव करते समय एक आप्तपुत्र भाई से बड़ा एक्सिडन्ट हो गया। उस समय नीरू माँ अमेरिका में थे। दादा का काम करने के लिए नीरू माँ के पास यह एकमात्र टेम्पो था और वह इतनी बुरी तरह टकरा

गया था कि उसे रिपेर करना पॉसिबल नहीं था। बड़ी मुश्किल से पैसा इकट्ठा करके यह टेम्पो खरीदा था। आप्तपुत्र भाई को लगा, मुझे तो दादा की हेल्प करनी है, उसके बजाय मुझसे इतना बड़ा नुकसान हो गया।

नीरू माँ के अमेरिका से इन्डिया वापस लौटने से पहले ही कुछ महात्माओं ने मिलकर दूसरी गाड़ी खरीदने की व्यवस्था कर ली, नई गाड़ी का ऑर्डर दे दिया गया।

नई गाड़ी की डिलिवरी का दिन आया। और बस, उसी दिन मैंने उन भाई का पक्का साथी बनने का निश्चय किया। मेरे लिए यह बहुत अच्छा चान्स था। प्लान के अनुसार सबसे पहले मैंने उनके अंदर के कॉन्फिडन्स को बाहर धकेला। उन भाई को लगा, 'अब जिंदगी भर मेरे हाथ में कोई गाड़ी नहीं आएगी क्योंकि मैंने एक बार ठोक दी।' भाई की ऐसी हालत देखकर मुझे मज़ा आने लगा था कि तभी नीरू माँ ने उन्हें बुलाकर कहा, 'जाओ, नई गाड़ी लेकर आओ।' मुझे तो अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ, 'नीरू माँ ये क्या कह रहे हैं! जिस व्यक्ति ने एक बार गाड़ी ठोक दी, उसे ही नई गाड़ी लेकर आने को कह रहे हैं! ऐसा कौन करता है?!'

उन भाई को भी संकोच हो रहा था। वैसे, अभी तक वे भयभीत नहीं हुए थे। लेकिन उनका कॉन्फिडन्स तो मैंने तोड़ दिया था। नीरू माँ ने उन पर पूरा विश्वास रखकर कहा, 'गाड़ी की डिलिवरी लेने तुम्हें ही जाना है। अगर अभी तुम गाड़ी नहीं चलाओगे तो जिंदगी में कभी नहीं चला पाओगे। तुम्हारा गाड़ी चलाने का कॉन्फिडन्स टूट जाएगा। इसलिए तुम बिल्कुल भी डरे बिना बिन्दास गाड़ी लेकर आओ। फिर हम शाम का खाना साथ में खाएँगे, उसके बाद तुम नीरू माँ को एक बड़ा राउन्ड मारने ले जाना।' नीरू माँ ने मेरे पूरे प्लान पर पानी फेर दिया।

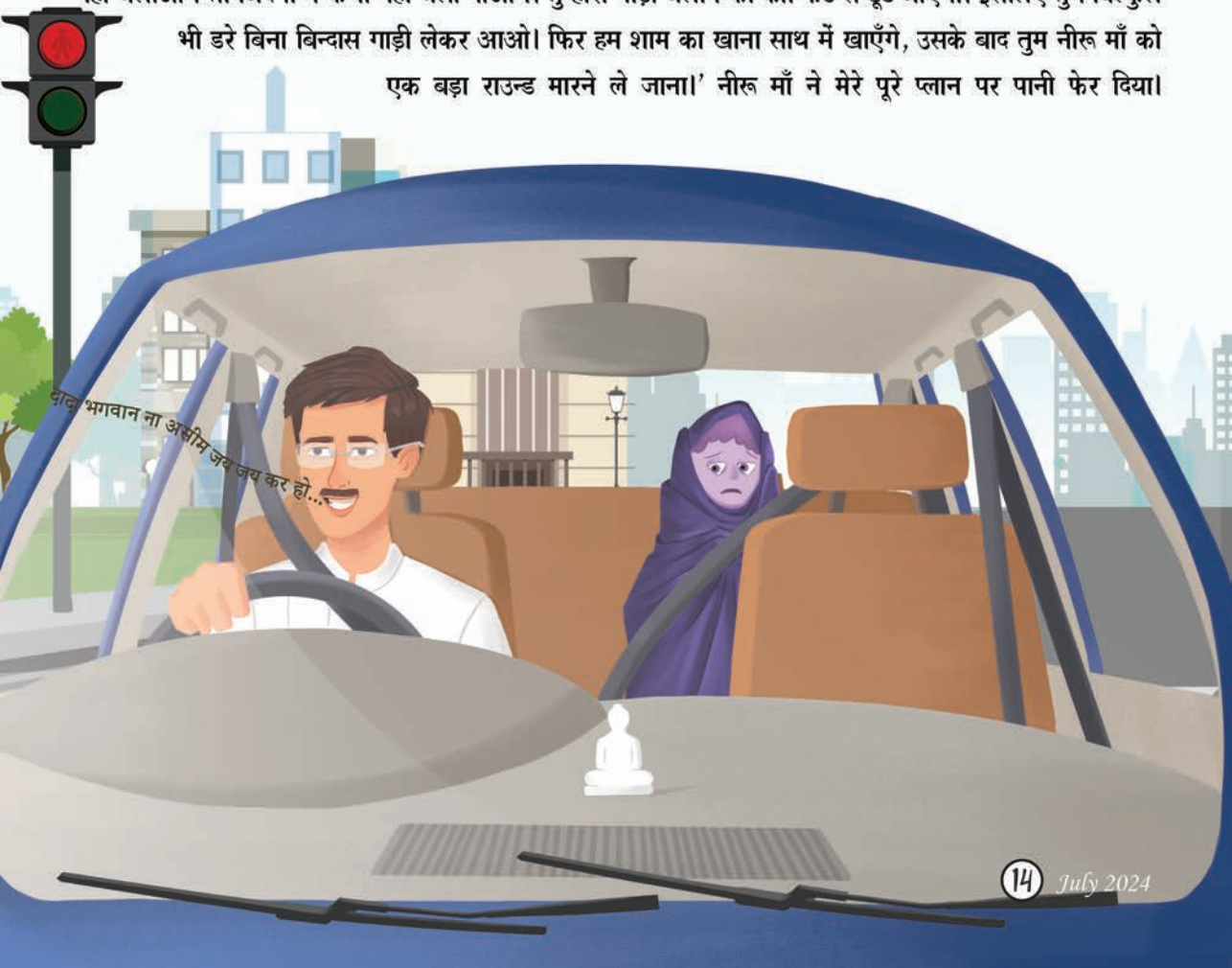

नीरू माँ के पॉज़िटिव शब्दों और विश्वास से उनका टूटा हुआ कॉन्फिडन्स रिपेर हो गया।

लेकिन फिर भी मैंने हार नहीं मानी। मुझे लगा, 'भाई को ज़रूर डर लगेगा। वे मुझे याद करेंगे और मैं उनके पास चला जाऊँगा।' लेकिन उन्होंने मुझे बिल्कुल भी याद नहीं किया। उल्टा वे पूरे रास्ते 'असीम जय जयकार' और 'त्रिमंत्र' बोलते रहे और सेफली गाड़ी लेकर वापस आ गए।

आज तक मैं उनके आस-पास भी नहीं जा सका हूँ। वे आज भी आराम से गाड़ी चलाते हैं। लगता है कि नीरू माँ ने उन्हें कोई 'भय प्रूफ' सुरक्षा कवच पहना दिया है!

फैसला

पार्टी खत्म होने आई। सभी ने अपनी-अपनी हार के बारे में बता दिया था। किसकी 'हार' सबसे बड़ी थी यह निर्णय करना मुश्किल हो गया। 'जीत' किसकी हुई यह तो सभी को पता चल गया।

तभी चिंता बोल उठी। 'फ्रेन्ड्स, अगर हारना ही हो तो मैं सिर्फ नीरू माँ के सामने ही हारना पसंद करूँगी।' और सभी चिंता की बात से सहमत हुए।

दादाजी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : दादा, आप से जो माँगो वह मिलता है, ऐसा कहते हैं।

दादाश्री : जो माँगता है, वह मिलता है। यदि वह कहे कि 'मेरा दर्द दूर हो जाए', वे उसे दूर कर देते हैं।

प्रश्नकर्ता : तो यह दूर कर दीजिए न।

दादाश्री : नहीं, वह तो पाँच-दस मिनट ऐसा बोलना पड़ता है। 'दादा भगवान के असीम जय जयकार', बोलेगा न, तो सब दूर हो जाता है। सांसारिक अड़चन आए तो 'त्रिमंत्र' बोलो। फिर 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' बोलो, तो सारी परेशानियाँ अपने घर चली जाएँगी।

चाहे जैसे भी विपरीत संयोग क्यों न हों, ज्ञानी पुरूष के आश्रित को 'मेरा क्या होगा' ऐसा नहीं होता है। क्योंकि वहाँ 'हम' और 'हमारा ज्ञान' दोनों उपस्थित हो ही जाते हैं और आपका हर तरह से रक्षण करते हैं!

हम तो कहते हैं कि 'पूरे संसार के दुःख हमें हों। आपमें यदि शक्ति है तो आपके सारे दुःख हमारे चरणों में अर्पण कर जाओ। फिर यदि दुःख आए तो हमसे कहना।' आपके दुःख मुझे सौंप दो और यदि आपको विश्वास हो तो वे आपके पास नहीं आएँगे।

शब्द समझ

संयोग - परिस्थितियाँ

आश्रित - जिसने ज्ञानी से रक्षण माँगा हो

चलो खेलें...

★ नीचे दिए गए नंबर्स को जोड़-घटाव करके उसके जवाब राउन्ड में लिखकर थीओ और उसके फ्रेन्ड्स को आलु की पार्टी में जाने का रास्ता खोजने में मदद करो।

16 -8 +9 -7 +6 -8 +9 -8 +6 -2 +8 -7 +5 -8 +7 -6 +3 -6 +7 -3 +9 -10 +8 -9 +7 -4 +8 -9

AALOO CHILLY

मुझे विश्वास था कि आलु जीतेगा। इसीलिए मैंने उसकी जीत सेलिब्रेट करने के लिए पार्टी की तैयारियाँ पहले से ही कर ली थीं। मुझे लग रहा था कि मेरी ग्रान्ड पार्टी देखकर शायद सब आलु की स्केटिंग भूल जाएँगे।

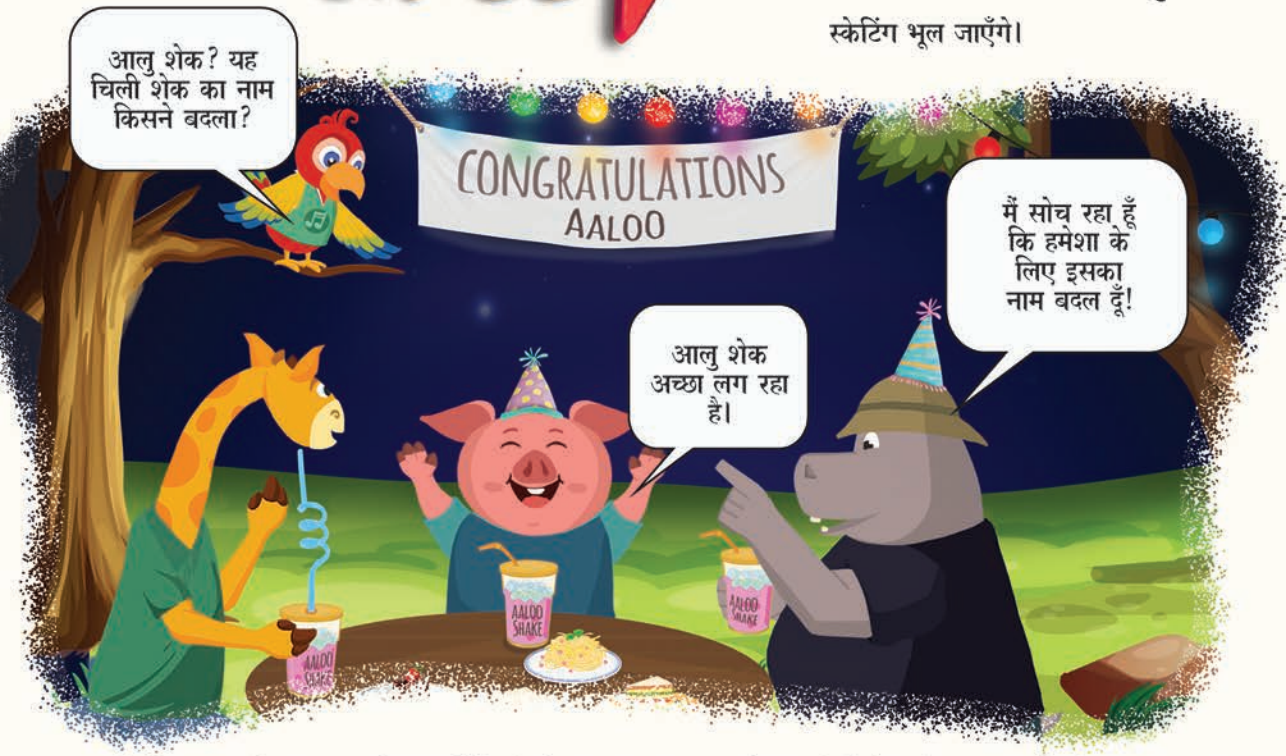

थीओ इतना अधिक सयाना है न, उसे चिली शेक का नाम बदलना है! उनकी ऐसी बातें सुनकर मुझे अंदर गरम-गरम लगने लगा। तभी...

आलु की यह बात सुनकर मुझे अंदर ठंडा-ठंडा लगने लगा। आखिरकार, मेरी स्पीच का समय आ ही गया। मैं कहने जा ही रहा था कि मैंने किस तरह आलु को प्रोत्साहित किया कि तभी...

बोलना मुझे था लेकिन वे लोग बोलने लगे। उन्होंने सुना नहीं कि आलु ने क्या कहा? आलु ने मुझे क्रेडिट दिया है, तो अब मुझे कुछ बोलने का चान्स तो मिलना ही चाहिए न! ये लोग भी क्या 'आलु-आलु' कर रहे हैं!

मुझे लगता है कि मुझे पार्टी ही नहीं रखनी चाहिए थी। सिर्फ मैं और, आलु हम दोनों ने चिली शेक पीकर सेलिब्रेट किया होता तो कितना मज़ा आता! मुझे लगा कि मुझे आलु को लेकर घर चले जाना चाहिए! लेकिन आलु तो सबके बीच खड़ा था। उसे कैसे वहाँ से बाहर निकालता?

मुझे फिर से अंदर गरम-गरम लगने लगा। मैंने पार्टी अरेन्ज करने के लिए बहुत काम किया था। मुझे लगा कि अब मुझे आराम करना चाहिए। इसलिए मैं घर जाने के लिए निकल गया।

यह चिली, आलु के बिना क्यों चला गया? उसे अंदर गरम-गरम क्या लग रहा था? क्या उसके शेक में कुछ प्रॉब्लम था या कुछ और कारण था?

Akram Express

July 2024
Year : 12, Issue : 04
Conti. Issue No.: 136

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

बेबी महात्मा और लिटल महात्मा के लिए सेन्टर संबंधी जानकारी

बेबी महात्मा और लिटल महात्मा यानी ४ साल से १२ साल के बच्चों के लिए संस्कार सिंचन केंद्र। जिसमें बच्चों को गेम्स, स्टोरी, एक्टिविटी, उल्लास और मनोरंजन के साथ मिलती है, ज्ञान की समझ। इन संस्क्रर सिंचन केंद्रों का संचालन कई शहरों में किया जा रहा है, अधिक जानकारी के लिए इस कोड को स्कैन करें।

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशिप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. AGIA4313# और यदि लेबल पर मेम्बरशिप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. AGIA4313## अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर Whatsapp करें।

१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on Behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba Multiprint, Opp. H B Kapadiya New High School, Chhatral-Pratappura Road,
At-Chhatral, Tal. Kalol, Dist. Gandhinagar – 382729.